कक्षा : ग्यारहवीं – जैन सिद्धान्त रत्नाकर (परीक्षा 13 जुलाई, 2025)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(a) चतुर्थ गुणस्थान में उदय योग्य प्रकृतियों की संख्या हैं-
(क) 100 (ख) 101
(ग) 104 (घ) 99 (ग)

(b) छठे गुणस्थान में बन्धने वाली प्रकृतियाँ हैं-
(क) 63 (ख) 58
(ग) 56 (घ) 77 (क)

(c) आठवें गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों की उदीरणा होती है-
(क) 73 (ख) 69
(ग) 39 (घ) 63 (ख)

(d) नामकर्म की कितनी प्रकृतियों का बंध नहीं होता है-
(क) 25 (ख) 27
(ग) 28 (घ) 26 (घ)

(e) दर्शन विशुद्धि किससे होती है-
(क) वन्दना (ख) सामायिक
(ग) चतुर्विंशतिस्तव (घ) आलोचना (ग)

(f) किसका उत्कृष्ट फल तीसरे भव में मोक्ष होता है-
(क) निर्वेद (ख) संवेग
(ग) स्वाध्याय (घ) ध्यान (ख)

(g) किससे अन्य जीव विनयवान बनते हैं-
(क) गुरुसाधर्मिक शूश्रुषा (ख) आलोचना
(ग) धर्मश्रद्धा (घ) स्वाध्याय (क)

(h) 73 सूत्रों में वाचना स्वाध्याय का नम्बर कौनसा है-
(क) 18 (ख) 20
(ग) 19 (घ) 21 (ग)

(i) किस साधना से अव्याबाध सुख की प्राप्ति होती है-
(क) संवेग (ख) धर्मश्रद्धा
(ग) गर्हणा (घ) पृच्छना (ख)

(j) आस्रव द्वार बन्द करने के लिए क्या करना चाहिए-
(क) निन्दना (ख) गर्हणा
(ग) स्वाध्याय (घ) प्रत्याख्यान (घ)

(k) निसंगता किसका फल है-
(क) अप्रतिबद्धता (ख) निन्दना
(ग) गर्हणा (घ) प्रतिक्रमण (क)

(l) काय समाधारणता का फल क्या है-
(क) ज्ञान पर्यव की विशुद्धि (ख) चारित्र पर्यव की विशुद्धि
(ग) संवर (घ) निर्जरा (ख)

(m) शीलरहितता तथा व्रतरहितता किसके बन्ध हेतु हैं-
(क) नरकायु (ख) देवायु
(ग) चारों आयु (घ) तिर्यंचायु (ग)

(n) रात्रि-भोजन विरमण व्रत का समावेश किस व्रत में होता है-
(क)सत्य (ख) अहिंसा
(ग) अस्तेय (घ) अपरिग्रह (ख)

(o) विचिकित्सा किसका अतिचार है-
(क) दर्शन (ख) ज्ञान
(ग) चारित्र (घ) तप (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) मनुष्यायु की उदीरणा प्रमाद अवस्था में ही होती है। (हाँ)
(b) दूसरे गुणस्थान में जिननाम की सत्ता नहीं होती है। (हाँ)
(c) अप्रमत्त अवस्था में आयु का बंध शुरु हो सकता है। (नहीं)
(d) प्रमोद भावना का विषय प्राणी मात्र है। (नहीं)
(e) संवेग प्राप्ति के लिए जगत् के स्वभाव का चिन्तन करना चाहिए। (हाँ)
(f) सहाय प्रत्याख्यान से अनिवृत्ति उत्पन्न होती है। (नहीं)
(g) श्रुत की आराधना से ज्ञानावरणीय कर्म का नाश होता है। (नहीं)
(h) सूर्यास्त बाद कुछ भी खाने-पीने की भावना नहीं रखना आलोकित पान भोजन है। (हाँ)
(i) केवल योगों द्वारा होने वाली हिंसा द्रव्य हिंसा कहलाती है। (हाँ)
(j) ''जैसा कहता है, वैसा करता है।'' यह शक्ति करण सत्य से प्राप्त होती है। (हाँ)
(k) अकिंचन जीव अर्थ लोलुप पुरुषों के द्वारा प्रार्थनीय होता है। (नहीं)
(l) मार्दव से आठ मदस्थान नष्ट हो जाते हैं। (हाँ)
(m) कषाय के त्याग से जीव लोक के अग्रभाग पर पहुँच जाता है। (नहीं)
(n) संभोग प्रत्याख्यान से जीव तीसरी सुख शय्या को प्राप्त कर लेता है। (नहीं)
(o) 'वीतरागता' कषाय के प्रत्याख्यान से प्राप्त होती है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	अप्रमत्त गुणस्थान	(क) वोदाणं	59/58 प्रकृतियाँ
(b)	जैन धर्म का मौलिक इतिहास	(ख) पल्हायण भावं	सत्यं शिवं सुन्दरम्
(c)	पडिरुवणया	(ग) 59/58 प्रकृतियाँ	लाघवियं
(d)	तवेण	(घ) साम्परायिक	वोदाणं
(e)	खमावणयाए	(च) कोहविजएणं	पल्हायण भावं
(f)	करण सच्चेणं	(छ) सत्यं शिवं सुन्दरम्	करणसत्तिं
(g)	खंतिं	(ज) लाघवियं	साम्परायिक
(h)	कषाय सहित	(झ) व्रती	कोहविजएणं
(i)	निःशल्यो	(य) मूर्च्छा	व्रती
(j)	परिग्रह	(र) करणसत्तिं	मूर्च्छा

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a) मेरे 138 प्रकृतियों की सत्ता होती है। क्षायिक सम्य चरम शरीरी
(b) मुझमें गुणी महापुरुषों का ही समावेश होता है। पंच परमेष्ठी
(c) मैं तिर्यंचायु-बन्ध का आश्रव हूँ। माया
(d) मेरी स्थिति केवल दो समय की है। ईर्यापथिक
(e) मेरे 108 भेद हो सकते हैं। जीव-भावाधिकरण
(f) देव-गुरु आदि का अवर्णवाद मेरे बन्ध का हेतु है। दर्शन मोहनीय
(g) मेरा विषय दुःखीजन है। कारुण्य भावना
(h) मेरे लिए शरीर के स्वरूप का चिन्तन करना चाहिए। वैराग्य

(i) मेरा फल तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म का उपार्जन है। वैयावृत्य

(j) मेरे प्रत्याख्यान से अनेक सैकड़ों भवों का निरोध होता है। भक्त प्रत्याख्यान

(k) मैं व्रत के छिद्रों को ढ़क देता हूँ। प्रतिक्रमण

(l) मेरी साधना से कर्मों की प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश प्रभावित होते हैं। अनुप्रेक्षा

(m) तीन शल्यों का उद्धरण मेरे द्वारा किया जाता है। आलोचना

(n) मेरे कारण निर्विकारता उत्पन्न होती है। वचनगुप्ति

(o) मैं शैलेशीभाव को उत्पन्न करता हूँ। चारित्र सम्पन्नता

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(a) किसकी सत्ता वाला उपशम श्रेणि नहीं चढ़ सकता है ?
नरक, तिर्यंचायु

(b) अबन्ध किसे कहते हैं ?
अमुक गुणस्थान में कर्म का बंध नहीं हो किन्तु आगे हो तो वह अबन्ध कहलाता है।

(c) आहारक द्विक तथा तीर्थंकर नाम कर्म का उदय कहाँ होता है ?
आहारक द्विक का उदय संयतों को प्रमत्त अवस्था में ही सम्भव है। तीर्थंकर नामकर्म का उदय तीर्थंकर नामकर्म को बाँधे हुए जीव के केवलज्ञान के पश्चात तेरहवें तथा चौदहवें गुणस्थान में ही होता है।

(d) 9वें गुणस्थान में वेद का उदय कैसे माना जाता है ?
सवेदी में गुणस्थान पहले से नवमें तक तथा अवेदी में गुणस्थान नवमें से चौदहवें तक होते हैं अर्थात् नवमें गुणस्थान के प्रारम्भ में जीव सवेदी रहता है तथा बाद में अवेदी बन जाता है।

(e) भगवान महावीर की विशुद्ध परम्परा पहले किन-किन नामों से पुकारी जाती थी ?
भगवान महावीर की विशुद्ध परम्परा सनातनी धर्म, ढूँढिया, साधुमार्गी, बाईस टोला तथा स्थानकवासी के नामों से पुकारी जाती है।

(f) ''बालिका चोर से डरती है।'' इसका प्राकृत में अनुवाद कीजिए।
बाला चोरत्तो बीहइ।

(g) 'कर' धातु के भविष्यत्काल के पूरे रूप लिखिए।
कर=करना(भविष्यत काल)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प्रथम	करिहिइ	करिहिन्ति
मध्यम	करिहिसि	करिहिह
उत्तम	करिहिमि	करिहिमो

(h) आर्जव का क्या फल होता है ?
ऋजुता से जीव काया की सरलता, भावों की सरलता, भाषा की सरलता और अविसंवादिता को प्राप्त करता है तथा अविंसवाद सम्पन्नता से जीव धर्म का आराधक होता है।

(i) नीच गोत्र कर्म-बन्ध के कारण लिखिए।
परनिंदा, आत्म-प्रशंसा, सद्गुणों को ढाँकना, असद्गुणों को प्रकट करना, ये नीच गोत्र कर्म के बन्ध के कारण है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3=(27)

(a) क्षपक श्रेणि में नवें गुणस्थान के दूसरे भाग में कौनसी 16 प्रकृतियाँ सत्ता में नहीं रहती ?
स्थावरद्विक, तिर्यंचद्विक, नरकद्विक, आतप, उद्योत, स्त्यानर्द्धित्रिक, एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय, साधारण नामकर्म की सत्ता नहीं रहती है।

(b) स्थानक किसे कहते हैं ?

स्थानक पौषध, संवर, सामायिक आदि धार्मिक क्रियाओं को सम्पन्न करने का स्थान है। स्थानक में वर्ण, गंध, रस, स्पर्श आदि इन्द्रिय-पोषक विषयों का स्थान न होने से वैराग्य की और प्रवृत्त कराने वाली और संसार तारक क्रियाएँ सुगमता-पूर्वक शुद्ध रूप में होती है।

(c) स्थानकवासी परम्परा कितने व किनके द्वारा रचे हुए आगमों को प्रमाण मानती है ?

10 पूर्वी तक सारी आगम रचनाएँ है। 10 पूर्वी से 1 पूर्वी तक की वही रचना स्वीकार होगी जो आगम से विरोधी न हो। 1 पूर्वी के बाद का कोई ग्रन्थ आगम नहीं। निर्वाण संवत् 1000 के बाद का कोई ग्रन्थ आगम रूप में मान्य नहीं है।

(d) 'साहु' शब्द के सभी विभक्तियों के एकवचन के रूप लिखिए।

विभक्ति	एकवचन
प्रथम	साहू
द्वितीया	साहुं
तृतीया	साहुणा
चतुर्थी	साहुस्स
पंचमी	साहुत्तो
षष्ठी	साहुस्स
सप्तमी	साहुम्मि
सम्बोधन	साहू

(e) प्राकृत में चतुर्थी विभक्ति सम्बन्धी कोई तीन नियम लिखिए।

नोटः- इनमें से कोई तीन मान्य

1. जिसको देते हैं, उसको सम्प्रदान कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा-सो विप्पाय धणं देइ।

2. जिस प्रयोजन से कोई कार्य किया जाता है, उस प्रयोजन की चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा-मोक्खाय हरिं भजइ।

3. नमो के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा-महावीराय नमो।

4. जिस पर क्रोध करते है, उसकी चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा-सो बालाए कुज्झइ।

(f) वीतरागता का फल लिखिए।

वीतरागता से स्नेहानुबंधनों और तृष्णानुबन्धनों का विच्छेद हो जाता है। फिर वह मनोज्ञ और अमनोज्ञ, शब्द , स्पर्श, रस और गन्ध से तथा सचित्त-अचित्त और मिश्र द्रव्यों से विरक्त (रागद्वेष मुक्त) हो जाता है।

(g) ज्ञान-सम्पन्नता से किस फल की प्राप्ति होती है, उससे क्या मिलता है ?

ज्ञान-सम्पन्नता से जीव सर्वभावों का अधिगम बोध प्राप्त करता है। ज्ञान सम्पन्नता से जीव चतुर्गतिक संसाररूपी कान्तार महारण्य में विनष्ट नहीं होता-रूलता नहीं।

जिस प्रकार सूत्र (धागे) सहित, सूई गिर जाने पर भी विनष्ट नहीं होती, खो नहीं जाती, उसी प्रकार ससूत्र (शास्त्रज्ञान सहित) जीव संसार में विनष्ट नहीं होता। फिर वह ज्ञान, विनय, तप और चारित्र के योगों कों सम्प्राप्त करता है तथा स्वसिद्धान्त और परसिद्धान्त में विशारद होकर प्रामाणिक पुरुष हो जाता है।

(h) केवलज्ञान-प्राप्ति के पश्चात् शैलेशी अवस्था कैसे प्राप्त होती है ?

केवलज्ञान प्राप्ति के पश्चात् शेष आयु कर्म को भोगकर जब अन्तर्मुहूर्त्तकाल परिमित आयु शेष रहती है तब अनगार योग का निरोध करता हुआ सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाती नामक शुक्लध्यान को ध्याता हुआ सर्वप्रथम मनोयोग का निरोध करता है। मनोयोग का निरोध करके वचन योग का

निरोध करता है। वचनयोग का निरोध करके काययोग का निरोध करता है। काययोग का निरोध करके आनापान-श्वासोच्छ्वास का निरोध करता है। श्वासोच्छ्वास का निरोध करके ईषत्-स्वल्प (मध्यमगति से) पाँच ह्रस्व अक्षरो के उच्चारण जितने काल में समुच्छिन्नक्रियाऽनिवृत्ति नामक शुक्लध्यान को ध्याता हुआ वह अनगार फिर वेदनीय आयु, नाम, गोत्र, इन चार कर्मांशों का एक ही साथ क्षर कर देता है।

(i) सत्य व्रत की पाँच भावनाएँ कौनसी हैं ?

1. अनुवीचि भाषण- पापरहित एवं शास्त्र-मर्यादा सहित विचारपूर्वक वचन बोलने की भावना रखना।
2. क्रोध-प्रत्याख्यान, 3. लोभ-प्रत्याख्यान, 4. भय-प्रत्याख्यान, 5. हास्य-प्रत्याख्यान।
क्रोध, लोभ, भय तथा हास्य इन चारों के आवेग में मुख से कोई वचन न निकल जाये, ऐसा मन में चिन्तन करते रहना।